श्री सूर्य देव स्तुति - भावार्थ सहित

(ब्रह्म-पुराण अध्याय २८ पर आधरित)

कविः डॉ यतेंद्र शर्मा

श्री राम कथा संस्थान पर्थ

कार्यालय: ३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया – ६०२५
वेबसाइट: https://shriramkatha.org
ई-मेल: srkperth@outlook.com
टेलीफोन: +६१ (०८) ९४०१ १५४३

श्री राम कथा संस्थान पर्थ उद्देश्य

- श्री राम कथा संस्थान भगवान् स्वामी श्री रामानंद जी महाराज (१४वीं शताब्दी) की शिक्षाओं पर आधारित एक सनातन वैष्णव धार्मिक संस्था है।
- श्री संस्थान का सिद्धांत धर्म, जाति, लिंग एवं नैतिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव रहित है। 'हरि को भजे सो हरि को होई' संस्थान का मूल मन्त्र है।
- श्री संस्थान का मानना है कि शुद्ध हृदय एवं निःस्वार्थ भाव भक्ति ईश्वर को अति प्रिय है। सभी प्रभु-भक्त एक दूसरे के भाई बहन हैं।
- ब्रह्म मनोभाव: भगवान् श्री राम, माता सीता एवं उनके विविध अवतार ही सर्वोच्च ब्रह्म हैं। वह सर्व-व्याप्त एवं विश्व के सरंक्षक हैं।
- आत्मा मनोभाव: आत्मा का अस्तित्व सर्वोच्च ब्रह्म के परमानंद पर निर्भर है। आत्मा को सर्वोच्च ब्रह्म ही निर्देशित एवं प्रबुद्ध करते हैं। श्री राम, माता सीता एवं उनके अवतार ही जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष दिलाने में समर्थ हैं।
- माया मनोभाव: माया प्रकृति के तीन गुण - सत, रज और तमस, के प्रभाव से प्राकट्य होती है। माया को सर्वोच्च ब्रह्म ही नियंत्रित करने में समर्थ हैं। सर्वोच्च ब्रह्म पर ध्यान केंद्र करने से माया का विनाश होता है, और जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा मिल मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- श्री संस्थान इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निरंतर सनातन धार्मिक पत्रिकाएं, पुस्तकें, पुस्तिकाएं, काव्य ग्रन्थ आदि की रचनाएं एवं प्रकाशन करती है। साथ ही, समय समय पर श्री राम एवं अन्य धार्मिक कथाओं के संयोजन का भी प्रयास करती रहती है।

श्री राम कथा संस्थान पर्थ
३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज़, वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया – ६०२५
वेबसाइट: https://shriramkatha.org
ईमेल: srkperth@outlook.com

श्री सूर्य देव स्तुति - भावार्थ सहित

(ब्रह्म-पुराण अध्याय २८ पर आधरित)

कवि
डॉ यतेंद्र शर्मा

प्रकाशक

श्री राम कथा संस्थान पर्थ
३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज़, वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया – ६०२५
वेबसाइट: https://shriramkatha.org
ईमेल: srkperth@outlook.com

निवेदन

शास्त्रों में सूर्यदेव को मान-सम्मान, ऊर्जा, उच्च पद, प्रभावशाली, आत्मा-कारक एवं चिकित्सा का स्वामी माना गया है। समस्त चराचर जगत की आत्मा सूर्यदेव ही हैं। सूर्य से ही इस पृथ्वी पर जीवन है। वैदिक काल से ही आर्य सूर्य को विश्व का कर्ता-धर्ता मानते रहे हैं। सूर्य का शब्दार्थ है, सर्व प्रेरक। यह सर्व प्रकाशक, सर्व प्रवर्तक होने से सर्व कल्याणकारी है। ऋग्वेद में सूर्यदेव को सर्वश्रेष्ठ देव कहा गया है। यजुर्वेद में 'चक्षो सूर्यो जायत' कह कर सूर्य को भगवान का नेत्र माना गया है। छान्दोग्यपनिषद में सूर्य को प्रणव निरूपित कर उनकी ध्यान साधना से पुत्र प्राप्ति एवं रोगीओं के व्याधि हरण करने का कारक बताया गया है। ब्रह्मवैर्वत पुराण में सूर्य को परमात्मा स्वरूप माना गया है। प्रसिद्ध गायत्री मंत्र सूर्य परक ही है। सूर्योपनिषद में सूर्य को ही संपूर्ण जगत की उत्पत्ति एवं पालन का एक मात्र कारण निरूपित किया गया है। ज्योतिष के अनुसार सूर्य को नवग्रहों में प्रथम ग्रह और पिता के भाव कर्म का स्वामी माना गया है। जीवन से जुड़े तमाम दुखों और रोग आदि को दूर करने के साथ साथ जिन्हें संतान नहीं होती, उन्हें सूर्य साधना से तुरंत यथोचित लाभ की प्राप्ति होती है।

ब्रह्मपुराण के २८वें अध्याय में स्वयं ब्रह्मदेव ने सूर्यदेव का महात्मय समझाया है। हम यहां ब्रह्मपुराण के २८वें अध्याय का हिंदी काव्यानुवाद कर लोक हित में इस पुस्तिका को प्रकाशित करते हैं।

मकर संक्रांति के दिवस सूर्यदेव अपने पुत्र शनिदेव के गृह मकर राशि में प्रवेश करते हैं। यह पिता-पुत्र का मिलन अत्यंत मंगलकारी है। शास्त्रों में ऐसी मान्यता है कि मकर संक्रांति के दिवस सूर्य उपासना से अत्यंत लाभ होता है।

आपका अपना, प्रभु की सेवा में रत,

डॉ यतेंद्र शर्मा
श्री राम कथा संस्थान पर्थ
पर्थ, ऑस्ट्रेलिया - ६०२५

अथ श्री सूर्य देव स्तुति

पहुंचे ब्रह्मलोक सब ब्राह्मन, पड़े ब्रह्मदेव वह चरनन ।
हे सर्वश्रेष्ठ श्री भगवन, है कौन देव जो श्रेष्ठ सब देवन ।। (१)

भावार्थ: (एक बार) सभी ब्राह्मण ब्रह्मदेव के पास उनके लोक ब्रह्मलोक पहुंचे। ब्रह्मदेव के चरणों में पड़कर वह यह प्रश्न पूछने लगे, 'हे सर्वश्रेष्ठ श्री भगवन, (हमें बताएं) सब देवताओं में श्रेष्ठ देव कौन है?'

हो गृहस्थ साधु या योगन, करें सभी जिन का पूजन ।
दिव्यानुभूति हो सुमरन, करें सुभग कल्यान जपन ।। (२)

भावार्थ: (इस ब्रह्माण्ड में) साधु, योगी अथवा गृहस्थ , सभी जिसका पूजन करते हैं। जिनके स्मरण मात्र से परम आनंद की अनुभूति होती है, एवं जपन से सौभाग्य की प्राप्ति एवं कल्याण होता है।

श्रेष्ठ देव जो वासी स्वर्गन, जो प्रणेता हैं सब पितरन ।
समान जिन है न अन्यन, कियो ब्रह्माण्ड जब सृजन ।। (३)

भावार्थ: स्वर्गलोक में वास करने वाले ऐसे कौन से देवता हैं जो हमारे पूर्वजों के प्राण दायक हैं। जब आपने ब्रह्माण्ड का सृजन किया तो उनके समान और कोई अन्य नहीं था।

हैं भू आश्रय काल प्रलयन, दें सहारा हो जब विघटन ।
हो तुम्हीं योग्य ब्रह्मन, जो बता सकें यह भेद गहन ।। (४)

भावार्थ: जो प्रलय काल में पृथ्वी के आश्रय दाता हैं। (प्रलय काल के समय) छिन्न भिन्न होने पर वह सहारा देते हैं। हे ब्रह्मदेव, आप ही इस गूढ़ रहस्य को बताने में समर्थ हैं।

बोले तब ब्रह्मदेव सुवचन, उठो उठो सब श्रेष्ठ ब्राह्मन ।
हैं सूर्य ही श्रेष्ठ सब देवन, जो निर्मूल करें तम प्रगटन ।। (५)

भावार्थ: (ब्राह्मणों का यह प्रश्न सुनकर) तब ब्रह्मदेव बोले, 'हे सभी ब्राह्मणो, (मेरे चरणों से) उठो, उठो। सूर्यदेव ही वह सबसे श्रेष्ठ देव हैं जो प्रगट होते ही अन्धकार को दूर कर देते हैं (तमसो मा ज्योतिर्गमय - अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर देते हैं)।'

न ज्ञान अन्त जन्म बोधन, सूर्य देव हैं सत सनातन ।
हैं अति स्थिर बल धारन, झुलसे भू उनकी किरनन ।। (६)

भावार्थ: सूर्यदेव ही सत्य एवं सनातन हैं (अत्यंत प्राचीन) हैं। उनके जन्म और अंत का ज्ञान किसी को भी नहीं है। वह अति बलशाली हैं। उनकी किरणें विश्व को झुलसाने की शक्ति रखती हैं (अर्थात - दुष्टों का विनाश करने की शक्ति रखती हैं)।

सहायक जब करूँ सृजन, हों कृपा सों जीव पावन ।
हेतु जन्म प्राणी कारन, न कभी क्षीण न कभी पतन ।। (७)

भावार्थ: वही श्रष्टि के निर्माण में मेरे सहायक हैं। उन्हीं की कृपा से प्राणीओं में पवित्रता की अनुभूति होती है। वही प्राणीओं के जन्म के कारण हैं। वह न कभी क्षीण होते हैं, और न ही उनका कभी पतन होता है।

वही जनयित्र सभी पितरन, हैं सुरूप वही सब देवन ।
दृढ़ स्थिर अधिष्ठानन, शरण उनकी पाएं अनुद्विग्नन ।। (८)

भावार्थ: वह ही सभी पूर्वजों के जनक हैं। वही सभी देवताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनका आसान अति दृढ़ है। उनकी शरण में जाने से व्याकुलता नष्ट होती है।

हो जब संसार का सृजन, हैं विश्व विकास के साधन ।
काल प्रलय हो विघटन, तब विलीन जन अन्तर्भागन ।। (९)

भावार्थ: जब विश्व का सृजन होता है तो वह ही विकास के साधन बनते हैं (प्राणीओं को जीवन दान प्रदान करते हैं)। जब प्रलय काल में नाश होता है तो सभी प्राणी उनके भीतर विलीन हो जाते हैं।

त्यागें जब योगी तन, हों जब परिवर्तित वायु रूपन ।
वह लें शरण सूर्यलोकन, हैं जो स्वरुप दीप्ति पुंजन ।। (१०)

भावार्थ: जब योगी अपने तन का (समाधि द्वारा) त्याग करते हैं और वायु रूप में परवर्तित होते हैं, तब उनको सूर्यलोक, जो दीप्ति का भण्डार है, में शरण मिलती है।

जैसे पाएं वन खग अमन, करें लयन जब मध्य वृक्षन ।
तैसे पाएं शांति सब संतन, लें शरण जब रवि किरन ।। (११)

भावार्थ: जिस प्रकार पक्षीगण वृक्ष के मध्य में (पत्तों की शीतल छाया में) विश्रांति पाते हैं, उसी प्रकार जब संतगण रवि किरणों की शरण लेते हैं, तब सुख-शान्ति को प्राप्त होते हैं।

जैसे विदेह जनक साम्राजन, युक्त योग शक्ति गुनन ।
वालखिल्य ज्ञानी योगिन, जो लीन तपस्या विचरें वन ।। (१२)

भावार्थ: जिस प्रकार विदेह जनक सम्राट योग शक्तियों एवं (समस्त) गुणों से युक्त हैं, एवं तपस्या हेतु वन में विचरण करने वाले वालखिल्य (समस्त ऋग्वेद की ११ ऋचाएं ज्ञान प्राप्त योगी) हैं।

अथवा वेद व्यास ऋषिन, किए जो प्रतिपादित ब्रह्मन ।
पाएं ये सब शक्ति योगन, करें प्रवेश जब चक्र सूर्यन ।। (१३)

भावार्थ: अथवा ब्रह्म ज्ञान देने वाले महर्षि वेद व्यास हैं, इन सभी को योग शक्ति तभी प्राप्त हुई जब इन्होंने सूर्य-चक्र में प्रवेश किया (अर्थात सूर्य देव को अपना गुरु स्वीकार किया)।

व्यास सुत सुक देवन, हैं यशस्वी प्रिय कृष्ण भगवन ।
स्वीकारे रवि आधिपत्यन, पाए ज्ञान कृपा सों सूर्यन ।। (१४)

भावार्थ: महर्षि वेद व्यास के सुपुत्र महर्षि सुकदेव, जो यशस्वी हैं एवं भगवान् कृष्ण के अति प्रिय हैं, इनको भी ज्ञान प्राप्ति सूर्यदेव के शिष्य बनकर उन की कृपा से ही हुई।

ब्रह्मा विष्णु और महेशन, है वर्णित वेद दें सौभाग्यन ।
संभव यह तभी जब सूर्यन, करें दूर तमस अज्ञानन ।। (१५)

भावार्थ: वेदों में वर्णित है कि (त्रिदेव) ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश, भाग्यदाता हैं। लेकिन यह (सौभाग्य प्रदान करना) तभी संभव होता है जब सूर्य देव अज्ञान को दूर करते हैं (अर्थात प्राणीओं में विवेक जगा देते हैं)।

वर्णित यही ब्रह्म पुरानन, तजो अन्य भजो सूर्यदेवन ।
दें यही कृत्य शुभ फलन, हों जो अंतहीन आनंददायन ।। (१६)

भावार्थ: वेद पुराणों में यही वर्णित है कि सभी अन्य देवों को छोड़ केवल सूर्यदेव की स्तुति करो। यही शुभ कर्मों के फल-दाता हैं, जिसके आनंद का (फल प्राप्ति के आनंद का) कोई अंत नहीं होता।

करें सदैव रवि पूजन, हैं यही ईश सब जनयित्रन ।
हैं विश्व गुरु महाप्रज्ञन, दियो ज्ञान हनुमान भगवन ।। (१७)

भावार्थ: सदैव रवि का ही पूजन करें। यही सब प्राणीओं के जन्म-दाता एवं स्वामी हैं। यह महाज्ञानी विश्व गुरु हैं। स्वयं भगवन हनुमान जी को भी इन्होंने ही ज्ञान दिया था।

जानें न आदि अंत बोधन, हैं ब्रह्माण्ड के ये स्वामिन ।
करें माल किरन धारन, जासों शोभित प्रभा विश्वन ।। (१८)

भावार्थ: इनके आदि एवं अनंत का किसी को भी ज्ञान नहीं हैं। यही ब्रह्माण्ड के ईश्वर हैं। इन्हीं के ओजस्वी किरणों की माला धारण करने के कारण विश्व प्रभामय होता है।

सदैव स्थिर हो न पतन, हो हेतु चतुर्दश धरा सृजन ।
सिंधु धरा या जलबंधन, हैं यही नैयत्य प्राण दायन ।। (१९)

भावार्थ: इनका आसन सदैव स्थिर रहता है। इनका कभी पतन नहीं होता। यही १४ भुवनों के सृजन के कारण हैं (अर्थात इन्हीं के प्रभाव से मैं १४ भुवनों का सृजन करने में सफल होता हूँ)। समुद्र, पृथ्वी, जलासय, सभी में रहने वाले प्राणीओं के यह जीवन दाता हैं।

हों सब सृजित कृपा सूर्यन, हम ऋणी रवि भगवन ।
हेतु लोक जन कल्यानन, वासित तीर चन्द्रसरितन ।। (२०)

भावार्थ: (ब्रह्माण्ड) सृजन सूर्यदेव की कृपा से ही होता है। हम सभी इस हेतु इनके ऋणी हैं। जन कल्याण की भावना से प्रेरित इनका वास चन्द्रसरित नदी के तीर पर रहता है।

हेतु यही प्रजापति जन्मन, हैं अव्यक्त कियो विभाजन ।
विभाजित द्वादश आदित्यन, हैं यही इंद्र धातृ पर्जन्यन ।। (२१)

भावार्थ: प्रजापति (दक्ष) के जन्म का कारण भी यही हैं। यद्यपि अनभिव्यक्त हैं, (फिर भी जन कल्याण सुविधा हेतु), रवि १२ भागों में विभाजित हैं। यही (रवि के द्वादस अंग) इंद्र, धातृ, पर्जन्यन हैं।

यही तवस्त आर्यमन पूसन, भग विवासत अंषुमन ।
यही विष्णु मित्र वरुणन, अंग रवि सहस्त्र किरनन ।। (२२)

भावार्थ: यही तवस्त, आर्यमन, पूसन, भग, विवासत, अंषुमन, विष्णु, मित्र एवं वरुण हैं। इन (द्वादस) रवि के अंगों में सहस्त्रों किरणों का वास है।

आद्य रूप हरि आदित्यन, यही सुरदेव इंद्र भगवन ।
यही स्वीकर्ता हवि यज्ञन, हैं ध्वंसक सब देव शत्रुन ।। (२३)

भावार्थ: सूर्यदेव ही प्रथम देव हैं। यही देवताओं के देव इंद्रदेव हैं। यही यज्ञ हवि स्वीकार करते हैं। यही देवताओं के शत्रुओं का नाश करते हैं।

देव धातृ द्वितीय मुद्रन, जो करें ईश्वर महिमामंडन ।
सृजक पालक विश्वन, हैं यही प्रजापति यशस्विन ।। (२४)

भावार्थ: धातृ इनके दूसरे रूप हैं। ईश्वर के प्रताप को जताने वाले यह यशस्वी प्रजापति रूप में विश्व का सृजन और पालन करते हैं।

तृतीय रूप में पर्जन्यन, रहें स्थित सदा मध्य मेघन ।
करें वर्षा तब फले कृशन, बनें हेतु जग के पालन ।। (२५)

भावार्थ: इनका (सूर्यदेव का) तृतीय रूप पर्जन्यन मेघों के मध्य में निवास करता है। यही रूप वर्षा करता है जिससे कृषि फलती फूलती है, और विश्व का पालन होता है।

त्वष्टृ प्रभु बसें सब वृक्षन, हैं यही सृजक तत्व वैद्यन ।
हैं यही देव जन प्रजनन, जो करें मातृ गर्भ नियंत्रन ।। (२६)

भावार्थ: (चतुर्थ रूप) त्वष्टृ भगवन सभी वृक्षों में वास करते हैं। यही औषधि प्रदान करते हैं। यही देव एवं भूजन प्राणीओं के जन्म दाता हैं, जो माँ के गर्भ को नियंत्रित करते हैं।

पञ्चम रूप में हैं पूसन, जो स्थित मध्य अन्न खाद्यन ।
हैं यही हेतु सतत पोषन, नर नारि संग सब भूजन ।। (२७)

भावार्थ: पंचम रूप में यह पूसन हैं जो खाद्य के मध्य में वास करते हैं। यही नर, नारी सहित सभी पृथ्वी के प्राणीओं का निरंतर पोषण करते हैं।

षष्ठम रूप में हैं आर्यमन, करें प्रवाह वायु निर्देशन ।
सदा रहें मध्य सब देवन, दाता मुक्ति हमरे पितरन ।। (२८)

भावार्थ: इनके षष्ठ रूप का नाम आर्यमन है, जो वायु की दशा और उसके प्रवाह को नियंत्रित करते हैं। इनका निवास सभी देवताओं के मध्य में है। यही हमारे पूर्वजों के मुक्ति दाता हैं।

हैं यही भग सप्तम रूपन, हैं सरंक्षक तीनों लोकन ।
स्वता मान वैभव धन, ईश्वर यही सुर असुर भूजन ।। (२९)

भावार्थ: सप्तम रूप में यह भग हैं। (इस रूप में) यह तीनों लोकों के सरंक्षक हैं। यही मान, वैभव एवं धन के स्वामी हैं। यही सभी सुर, असुर, एवं भूजनों के ईश्वर हैं।

अष्टम रूप में हैं विवस्वन, दाता जन्म मनु रेवंतन ।
हैं जो अधिपति गुह्यकन, माता संक्षा बड़ रूपधारन ।। (३०)

भावार्थ: अष्टम रूप में इन्हें विवस्वन नाम से जाना जाता है। यह मनु रेवंत के जन्म दाता हैं जो बड़वा रूप धारिणी माता संक्षा (सूर्य देव की पत्नी) के गर्भ से उत्पन्न हुए तथा रहस्य के स्वामी हैं।

नवम रूप में विष्णु भगवन, हैं जो देवों के रिपुमदन ।
यही हैं पोषक जीव वृक्षन, हैं ईश्वर सुर असुर भूजन ।। (३१)

भावार्थ: नवम रूप में यह (स्वयं) भगवान् विष्णु हैं जो देवों के शत्रुओं का नाश करते हैं। इस रूप में यह सभी जीवों एवं वृक्षों के पोषक हैं। यही समस्त सुर, असुर एवं भू प्राणीओं के स्वामी हैं।

दशम रूप में हैं अंशुमन, जो करें नियन्त्रण पवन ।
हैं युक्त प्रभावान किरन, जो देते सभी दान जीवन ।। (३२)

भावार्थ: दशम रूप में इनका नाम अंशुमन है। इस रूप में यह पवन को नियंत्रित करते हैं। यह प्रभावान किरणों से युक्त हैं, जो सभी को जीवन दान देते हैं।

एकादस रूप में हैं वरुन, जो रहें स्थित मध्य जह्नन् ।
वह रक्षक सभी प्रजाजन, मगरमच्छ उनका वाहन ।। (३३)

भावार्थ: इनके ११वें रूप को वरुण नाम से सम्बोधित किया जाता है। यह जल के मध्य में रहते हैं। समस्त विश्व इनकी प्रजा हैं और यह उसके रक्षक हैं। इनका वाहन मगर है।

द्वादस रूप में मित्र भगवन, स्थित तट चन्द्रसरितन ।
रहें लीन सदा साधन, भोजन उनका केवल पवन ।। (३४)

भावार्थ: द्वादस रूप में इन्हें मित्र नाम से बुलाया जाता है। इनका निवास चन्द्रसरित नदी के तट पर है। यह सदैव केवल पवन का भोजन करते हुए साधना में लीन रहते हैं।

बोले ब्रह्मदेव तब वचन, सुनो सुनो हे सब ब्राह्मन ।
हैं सूर्य अति पूजित देवन, रहैं स्थित द्वादस रूपन ।। (३५)

भावार्थ: ब्रह्मदेव बोले, 'हे ब्राह्मणगण, सुनो, सुनो। सूर्यदेव इस प्रकार बारह रूपों में स्थित अति पूज्यनीय हैं।'

करे जो इनका पूजन मनन, द्वादस रूप श्री भगवन ।
पाए इहलोक में अमन, मरण पाए मोक्ष श्री वस्मन ।। (३६)

भावार्थ: इन के (सूर्यदेव के) द्वादस रूप का जो भी पूजन मनन करता है, उसे इहलोक में शांति और मरण पर साकेत धाम में निवास प्राप्त हो मोक्ष की प्राप्ति होती है।

कर बद्ध बोले तब ब्राह्मन, सुलझाओ हमरी गुत्थन ।
हैं अगर रवि प्राकृतन, और वही हैं शाश्वत भगवन ।। (३७)

भावार्थ: (ब्रह्मदेव के यह वचन सुनकर) सभी ब्राह्मण हाथ जोड़ कर तब (ब्रह्मदेव से) बोले, '(हे ब्रह्म देव) हमारी एक शंका का समाधान करो। अगर सूर्यदेव मौलिक एवं नित्य भगवन हैं तो -

कहाँ किए वह साधन, जो पा सके शक्ति अनुमोदन ।
बोले ब्रह्मा तब वचन, ब्राह्मन सुनो रहस्य अति गहन ।। (३८)

भावार्थ: उनका तप स्थान क्या था जिससे उन्हें अपनी (परम) शक्ति का आभास हुआ। तब ब्रह्मदेव बोले, 'हे ब्राह्मणगण, मैं अब तुम्हें एक अत्यंत गूढ़ रहस्य बताता हूँ।'

पूछे नारद सदृश प्रश्न, करें सम्बोधन मित्र भगवन ।
किए मित्र दूर वितर्कन, सुनो हे नारद मैं और वरुन ।। (३९)

भावार्थ: यही प्रश्न (ब्रह्मऋषि) नारद ने (भगवन) मित्र से पूछा था। तब (भगवन) मित्र ने उनकी शंका का समाधान करते हुए कहा, ' हे (ब्रह्मऋषि) नारद मैं और वरुण देव ने -

की हम संयति साथ गहन, था मेरा स्थान मित्रवन ।
मैंने स्वीकारा भोजन पवन, न था कोई अन्य खाद्यन ।। (४०)

भावार्थ: (भगवन मित्र एवं वरुणदेव ने) एक साथ गहन तपस्या की। मैंने (भगवन मित्र ने) सभी खाद्यानों का तिरस्कार कर केवल पवन का भोजन स्वीकारते हुए मित्रवन स्थान पर तप किया।

किया गहन तप देव वरुन, स्थान तट सिंधु प्रतीच्यन ।
ग्रहण जल केवल भोजन, किए साधना अनेक वर्षन ।। (४१)

भावार्थ: वरुण देव ने पश्चिमी सागर के तट पर केवल जल ग्रहण करते हुए सहस्त्रों वर्ष तप किया।

ऋषि नारद फिर पूछे प्रश्न, कियो किन ईश्वर पूजन ।
कियो कौन पितर शमन, जो दिए वरदान हो प्रसन्न ।। (४२)

भावार्थ: (ब्रह्मऋषि) नारद ने फिर (भगवन मित्र से) प्रश्न पूछा, '(आपने) किन ईश्वर की स्तुति की। किन पितरों की शान्ति हेतु तप किया जिन्होंने प्रसन्न होकर आपको वर दिए।'

बोले मित्र तब यह वचन, केंद्रित ध्यान विष्णु भगवन ।
हुए तब हम रहित पतन, स्थिर अविकारी हो दीक्षन ।। (४३)

भावार्थ: तब (भगवन) मित्र बोलें '(हे ब्रह्मऋषि नारद) हमने अपना ध्यान भगवान् विष्णु पर केंद्रित किया। उनकी कृपा से हम स्थिर, पवित्र एवं पतन रहित हो गए।

बोले नारद तब सुवचन, समझे हम हो क्यों प्रकर्षन ।
हो तुम हेतु विश्व सृजन, रूप अनादि अनंत भगवन ।। (४४)

भावार्थ: तब (ब्रह्मऋषि) नारद बोले, 'मैं समझ गया कि आप इतने उत्कर्ष किस प्रकार हुए। आप ही इस विश्व के सृजन के कारण बने। आपने अनादि भगवान का रूप पाया (उनका प्रतिभावान ओजस्व पाया)।

ज्ञाता भूत भविष्य अद्यत्वन, कियो सब वस्तु स्थापन ।
करें चारों अवस्था पूजन, बाल किशोर युवा व् वृद्धन ।। (४५)

भावार्थ: आप भूत, वर्तमान एवं भविष्य के ज्ञाता बने। आपने सभी (सांसारिक) वस्तुओं की स्थापना की। चारों अवस्था - बाल, किशोर, युवा एवं वृद्ध, के प्राणी आपकी स्तुति करते हैं।

करें सभी तुम्हरो पूजन, हर वर्ष मास दिन प्रति क्षन ।
पाएं सुख शान्ति अमन, हों पूर्ण समस्त मनोकामन ।। (४६)

भावार्थ: सभी प्राणी प्रत्येक वर्ष, माह, दिन एवं क्षण आपकी स्तुति करते हैं। (आपकी स्तुति से) उन्हें सुख शान्ति मिलती है तथा उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

तुम ही हमारे जनयित्रन, रहो स्थित सदैव सर्व भूतन ।
हो अनंत आकार धारन, हो तुम अति प्रिय त्रिदेवन ।। (४७)

भावार्थ: आप ही हम सब के माता पिता हैं। आप हर प्राणी में स्थित हैं। आप त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश) के अति प्रिय हो, तथा भगवद रूप धारी हो।

हरि मित्र बोले सुवचन, यद्यपि कठिन रहस्य वर्णन ।
असंभव भाव शाश्वत प्रदर्शन, चाहूँ यद्यपि मैं व्यक्तन ।। (४८)

भावार्थ: तब भगवान मित्र मधुर वचन बोले, '(हे ब्रह्मऋषि नारद) यद्यपि इस रहस्य का वर्णन करना अत्यंत कठिन है। मैं व्यक्त करना चाहूँ फिर भी इस पवित्र भाव का प्रदर्शन करना असंभव है।'

फिर भी करूँ प्रयास संतन, बता सकूं कुछ उत्कृष्टन ।
ब्रह्मऋषि सुनो सुवचन, हैं पूर्ण शील भक्ति भगवन ।। (४९)

भावार्थ: फिर भी हे संत, मैं प्रयास करता हूँ कि उनके कुछ गुण बता सकूं। हे ब्रह्मऋषि, यह सुवचन सुनो। भगवान् (विष्णु) भक्ति से भरे शील पूर्ण हैं।

हैं सूक्ष्म अचिन्त्य निश्चलन, रहित सुख सभी इन्द्रियन ।
हैं कामहीन अन्तर्भूतन, वह दैहिक रूप सभी भूजन ।। (५०)

भावार्थ: वह सभी इन्द्रियों के सुखों से रहित, कामहीन, अंतर्भूत, सूक्ष्म रूप में सदैव उपस्थित, अज्ञेय, पवित्र एवं सभी प्राणीओं में दैहिक रूप में विद्यमान हैं।

महाज्ञानी अमर आत्मन, है निवास हरि धाम पावन ।
है सदा स्थित अव्यक्त मन, सदैव वह रहित त्रिगुण ।। (५१)

भावार्थ: वह महाज्ञानी, अजर एवं अमर हैं। उनका निवास साकेत धाम है। वह त्रिगुणों (तमस, रजस एवं सत) से रहित हैं तथा उनका चित्त जिसे व्यक्त नहीं किया जा सकता, सदैव स्थिर रहता है।

काम क्रोध और दंभन, कभी न छू सकें जिन आत्मन ।
करें वर्णन सभी ग्रंथन, पावन श्री हिरण्यगर्भ भगवन ।। (५२)

भावार्थ: (कोई दुर्गुण) काम, क्रोध, मद (इत्यादि) उनकी आत्मा को छू भी नहीं सकता। उन पवित्र आत्मा को हमारे ग्रन्थ भगवान् हिरण्यगर्भ नाम से वर्णन करते हैं।

है वर्णित सब योग ग्रंथन, हैं वही विश्व महान प्रज्ञन ।
हैं वह अनुयायी सिद्धान्तन, हैं प्रमुख सभी सुर भूजन ।। (५३)

भावार्थ: इन विश्व के महानतम बुद्धिमान का योग ग्रन्थ भी वर्णित करते हैं। यही (धर्म) सिद्धांतों का अनुसरण करने वाले सभी सुर एवं भू-प्राणीओं के ईश्वर हैं।

करें वर्णन सांख्य तंत्रन, हरि नाम अनेक पर हैं एकन ।
हैं समाहित उनमें त्रिगुन, तमस रजस और सतन ।। (५४)

भावार्थ: सांख्य सूत्र में इनका वर्णन (इस प्रकार) है कि यद्यपि इनके अनेक नाम हैं, परन्तु यह एक ही हैं (एकेश्वरवाद)। इन्हीं में तीनों गुण - तमस, रजस एवं सत समाहित हैं।

वही हैं ब्रह्माण्ड आत्मन, हैं वही एकेश्वर अविनश्वरन ।
हैं भू स्वर्ग नर्क त्रिलोकन, यथार्थ में स्थित एकांगन ।। (५५)

भावार्थ: यही एकेश्वर अविनाशी प्रभु ब्रह्माण्ड की आत्मा हैं। यद्यपि यह भू स्वर्ग, नर्क, तीनों लोकों में हैं (दिखाई देते हैं), परन्तु इनका आसन एक स्थान पर ही है (साकेत धाम में ही है)।

रहें सदैव स्थिर भगवन, त्रिलोक रूप सूक्ष्म शरीरन ।
रहें स्थित सब के तन, फिर भी न दूषित उनके कर्म ।। (५६)

भावार्थ: सदैव स्थिर रूप में सूक्ष्म शरीर में तीनों लोकों में निवास करते हैं। वह यद्यपि सभी के शरीर में निवास करते हैं, परन्तु उनके कर्म कभी दूषित नहीं होते (उनके कर्म प्राणीओं के कर्म से प्रभावित नहीं होते)।

वह अंतर्भूत सभी के मन, हों सुर असुर अथवा भूजन ।
हैं साक्षी वह सबके कर्मन, समझ न सकें अज्ञानी जन ।। (५७)

भावार्थ: सुर, असुर, भू-प्राणी, वह सभी के हृदय में निवास करते हैं। सभी के कर्मों के साक्षी हैं। (दुर्भाग्यवश) अज्ञानी लोग यह नहीं समझ पाते।

स्वयं वही ज्ञाता ब्रह्मन, कहें हम सगुन अथवा निर्गुन ।
सर्व बुद्धिमान बोधाम्यन, स्व-प्रगट हुए आदि भगवन ।। (५८)

भावार्थ: उन्हें हम सगुण (रूप) कहें अथवा निर्गुण (रूप), वही ब्रह्म के ज्ञाता हैं। परम बुद्धिमान जिन्हें आत्मबोध है, वह आदि भगवन स्वतः ही (स्वेच्छा से) प्रगट हुए हैं।

हैं चरम उनके कर नयन, पग मुख उदर और शीर्षन ।
धारित चतुर्दिगन्तेषु कर्णन, रहैं सदा समीप प्रति जन ।। (५९)

भावार्थ: उनके हाथ, नेत्र, पैर, मुख, उदर और सर, सभी अद्भुत हैं। उनके कर्ण प्रत्येक स्थान पर हैं (अतः हर घटना वह जानते हैं)। वह प्रभु हर प्राणी के समीप रहते हैं (अतः अंतर्मन में स्थित हैं)।

ब्रह्माण्ड है उनका शीर्षन, विश्व उनका कर पग नयन ।
भू स्थित नासिका भगवन, करें वह त्रिलोक संचालन ।। (६०)

भावार्थ: ब्रह्माण्ड उनका सर है। विश्व उनके हाथ, पैर और नेत्र हैं। उनकी नासिका धरा पर स्थित है। (इस प्रकार) वह त्रिलोक का संचालन करते है।

सदैव हिय रहता प्रसन्न, करें स्वेच्छा सदैव जग भ्रमन ।
क्षेत्र करें सम्बोधित ग्रंथन, हैं वही परम यौगिक आत्मन ।। (६१)

भावार्थ: वह सच्चिदानंद हैं। अपनी इच्छा से विश्व भ्रमण करते रहते हैं। उन्हें ग्रन्थ क्षेत्र नाम से सम्बोधित करते हैं। वही परम यौगिक ईश्वर हैं।

हैं वही सर्व ज्ञानी भगवन, हैं ज्ञाता वह सब कर्म तन ।
वेद श्रुति में उल्लेखन, हैं वही पुरुष अव्यक्त अजन्मन ।। (६२)

भावार्थ: यह सर्व ज्ञाता भगवन सभी प्राणीओं के कर्मों का संज्ञान रखते हैं। वेद और श्रुति उन्हें अव्यक्त (जिन्हे व्यक्त न किया जा सके) एवं अजन्मा (जिनके जन्म को कोई नहीं जानता) नाम से सम्बोधित करती हैं।

विश्व करे विस्वा सम्बोधन, हैं वह ज्ञानी विविध मैत्रिन ।
हैं वह सर्व प्रकार पूर्णन, रहें व्याप्त वह सर्व त्रिलोकन ।। (६३)

भावार्थ: संसार उनको विस्वा नाम से (भी) सम्बोधित करता है। वह विविध विषयों के ज्ञानी हैं। सर्व प्रकार से पूर्ण वह त्रिलोकों में व्याप्त हैं।

दियो विश्वरूप नाम ग्रंथन, हैं वह स्वामी अनेक रूपन ।
रहें सम्बद्ध हरि चिंतन, पालन विश्व उनका कर्तव्यन ।। (६४)

भावार्थ: उन्हें ग्रन्थ विश्वरूप (भी) कहते हैं।अनेक रूप धरता, वह सदैव प्रभु के चिंतन में मग्न रहते हैं। विश्व पोषण उनका कर्तव्य है।

जो हरि संपन्न सद्गुणन, दियो सत्त्व नाम उन ग्रंथन ।
करें वही विश्व सृजन, अजन्मे नित्य सर्वोत्तम भगवन ।। (६५)

भावार्थ: चूँकि हरि संपन्न सद्गुणों से लिप्त हैं, अतः ग्रंथों ने उन्हें सत्त्व नाम से (भी) पुकारा है। वही अजन्मे पवित्र हरि विश्व का सृजन करते हैं।

करें सृजन श्रष्टि स्वात्मन, हो तब वृद्धि कोटि आत्मन ।
जैसे हो वर्षितम क्षामन, जब मिले शुद्ध जल कर्दन ।। (६६)

भावार्थ: वह श्रष्टि का सृजन अपनी पवित्र आत्मा से करते हैं। उनकी आत्मा कोटि कोटि आत्माओं में विभाजित हो जाती है। जिस प्रकार वर्षा का शुद्ध जल नमकीनी कीचड़ में पड़कर नमकीन हो जाता है -

होए परवर्तित आस्वादन, सादृश्य समाए नई आत्मन ।
हो प्रविष्ट आत्मा नए तन, हो परवर्तित विधित भावन ।। (६७)

भावार्थ: उसका (वर्षा के जल का) स्वाद बदल जाता है। उसी प्रकार (दूषित मनोभाव वाले) तन में जब आत्मा प्रविष्ट हो जाती है तो उसका भी मनोभाव बदल जाता है। (यहां ब्रह्मदेव संभवतः यह चर्चा कर रहे हैं कि पुनर्जन्म में आत्मा अपने कर्मों के साथ तन में प्रवेश करती है, जिसका परिणाम नियति के रूप में आता है। यद्यपि प्रभु ने पवित्र आत्मा ही सृजित की थी, लेकिन कर्म प्रभाव से वह तन से मिलकर दूषित हो जाती है।)

जब वायु हो प्रवेश तन, यद्यपि पवन है एकल तत्वन ।
पर बने वह पवन पञ्चन, पंचक व्यान समान नामन ।। (६८)

भावार्थ: जब वायु (स्वास) के द्वारा तन में प्रवेश करती है, तो वह केवल एक प्रकार की ही होती है। लेकिन तन (फेफड़ों) में पहुंचने पर वह पांच वायु में परवर्तित हो जाती हैं। यह पांच वायु के प्रकार हैं, व्यान, समान -

अपान उदान प्रान रूपन, दें दान जन जीवन परिरक्षन ।
वैसे ही हैं एकल भगवन, हैं एक यद्यपि रूप विभिन्न ।। (६९)

भावार्थ: अपान, उदान एवं प्रान रूप। यह (पांच वायु) प्राणों की रक्षा करती है। उसी प्रकार भगवान् एक ही हैं, परन्तु विभिन्न रूप में हैं।

सूर्यदेव ही त्रिरूप परिज्वन्, प्रथम जैसे उत्पन्न उदरन ।
द्वितीय यथा काष्ठ प्रज्वलन, तृतीय दिव्य पुण्य तत्वन ।। (७०)

भावार्थ: सूर्यदेव ही तीन प्रकार की अग्नि हैं। प्रथम अग्नि जो उदर में उत्पन्न होती है। दूसरे प्रकार की अग्नि जो काष्ठ द्वारा प्रज्वल्लित की जाती है, तथा तीसरी प्रकार की अग्नि जो दिव्य है (आकाशीय अग्नि)।

होती जठराग्नि उदर उत्पन्न, करती वह है पाच्य भोजन ।
काष्ठ अग्नि पकाए भोजन, हो प्रगट दिव्य अग्नि नभन ।। (७१)

भावार्थ: उदर से जठराग्नि उत्पन्न होती है, जो भोजन पचाती है। काष्ठ द्वारा उत्पन्न अग्नि भोजन पकाती है। दिव्य अग्नि आकाश से प्रगट होती है।

जैसे हो संभव दीप एकन, हों सहस्त्रों दीप प्रज्वलन ।
उसी प्रकार करें भगवन, कोटि कोटि आकार सृजन ।। (७२)

भावार्थ: जिस प्रकार एक दीप से सहस्त्रों दीप प्रज्वालित किये जा सकते हैं, उसी प्रकार भगवान् (एक आत्मा से) कोटि कोटि आकारों (आत्माओं) का सृजन कर देते हैं।

है नहीं कोई विश्व में नित्यन, हो वह जीव चल अचलन ।
अव्यय हैं केवल भगवन, हैं वह असीमित व् अचिन्त्यन ।। (७३)

भावार्थ: कोई भी विश्व में जीव, चल अथवा अचल, अविनाशी नहीं है। केवल भगवान् ही अक्षय, असीमित एवं अज्ञेय हैं।

हैं वह स्थित सर्वभूतन, वही परमात्मा सर्वोच्च स्वन ।
कहें मित्र सुनो सुवचन, यह वाणी वर्णित दिव्य संतन ।। (७४)

भावार्थ: सर्व प्राणीओं में स्थित यही परमात्मा सर्वोच्च हैं। भगवान् मित्र कहते हैं कि संत समाज यही वाणी बोलता है।

हरि अव्यक्त रहित त्रिगुनन, हो उन्हीं से विश्व उत्पन्न ।
यद्यपि हैं अदृश्य भगवन, पर हैं वही आदि निसर्गन ।। (७५)

भावार्थ: अव्यक्त त्रिगुणों से रहित प्रभु ही विश्व सृजन करते हैं। यद्यपि वह अदृश्य हैं (उन्हें देखा नहीं जा सकता), परन्तु वही आदि प्रकृति हैं।

समझो सत्य श्रेष्ठ ब्राह्मन, हैं रवि अव्यक्त युक्त भगवन ।
वही हैं सत्त वही असत्तन, वही पूजित सब सुर भूजन ।। (७६)

भावार्थ: (ब्रह्मदेव बोले) हे श्रेष्ठ ब्राह्मणो, यह सत्य है कि सूर्य देव ही अव्यक्त हरि हैं। वही वास्तविक हैं, और वही अवास्तविक। सभी सुर एवं भू प्राणी उन्हीं का पूजन करते हैं।

कहें ब्रह्मदेव सुनो ब्राह्मन, न सम कोई उन सदृशन ।
वही एक मात्र जनयित्रन, वही स्वामी समस्त विश्वन ।। (७७)

भावार्थ: ब्रह्मदेव कहते हैं कि हे ब्राह्मणों सुनो, 'इनके सदृश्य कोई नहीं है। वही एकमात्र सब के जनक हैं। वही समस्त संसार के स्वामी हैं।'

करो इन्हें ग्राह्य आत्मन, स्वयं करूँ मैं इन्हें नमन ।
हैं यह सन्निहित सभी जन, करो उन्हें तुम भव्य नमन ।। (७८)

भावार्थ: इन्हें आत्मा से ग्रहण करो (अतः हृदय से स्वीकार करो)। मैं स्वयं इन्हें नमन करता हूँ। यह सभी में समाहित हैं, अतः तुम सब इनका सादर नमन करो।

करें जब देव उनका पूजन, पाएं प्राप्ति लक्ष्य जीवन ।
यद्यपि भिन्न रूप धारन, करें हर रूप सब देव नमन ।। (७९)

भावार्थ: जब देवतागण इनका पूजन करते हैं, तब उन्हें उनके जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति होती है। यद्यपि भिन्न भिन्न देव भिन्न भिन्न रूप में हैं, परन्तु उनका हर रूप इन्हें नमन करता है।

करें सदैव हृदय धारन, पावन देव सूर्य आदि भगवन ।
हो जब कृपा रवि पावन, पा जाएं तब स्वअस्तित्वन ।। (८०)

भावार्थ: पवित्र देव सूर्य को वह सदैव अपने हृदय में धारण रखते हैं। जब रविदेव की कृपा हो जाती हैं तो प्राणी अपने अस्तित्व की प्राप्ति कर लेता है (अतः उसे उसका ध्येय मिल जाता है)।

हैं तस सूर्य हेतु पूजन, समस्त जग सुर असुर भूजन ।
सुनो हे नारद श्री सन्तन, है यह गुप्त भेद अवित्तन ।। (८१)

भावार्थ: हे (ब्रह्मऋषि) नारद, इस लिए सूर्यदेव सभी सुर, असुर और भू-प्राणीओं के पूज्य हैं। यह एक अज्ञात भेद है (जो मैंने तुम्हें बताया)।

सब विश्व आत्मसातित जन, करें सदैव सूर्य देव पूजन ।
रखो अति श्रद्धा स्व-मन, होंगे फलित सभी मन्मन् ।। (८२)

भावार्थ: सभी विश्व में आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किए प्राणी सदैव सूर्यदेव का पूजन करते हैं। अतः तुम भी अपने हृदय में उनके प्रति श्रद्धा रखो। तुम्हारी मनोकामनाएं अवश्य ही फलीभूत होंगी।

कहें सर्व श्रेष्ठ ब्रह्म त्रिदेवन, सुनो हे नारद यह वचन ।
जो भी करें पूर्ण समर्पन, श्रेष्ठ देव भगवन श्री सूर्यन ।। (८३)

भावार्थ: त्रिदेवों में श्रेष्ठ ब्रह्मदेव कहते हैं हैं कि हे नारद मेरे वचन सुनो। जो भी श्रेष्ठ देव सूर्यदेव को पूर्ण समर्पण कर देता है -

अवश्य मिले प्रवेश स्व-तन, सहस्त्र रविरश्मि वेषणन ।
हों जो रोग अवबाधित जन, पाएं वह मुक्ति विकारन ।। (८४)

भावार्थ: उसके शरीर में सहस्त्रों सूर्यदेव की किरणें अवश्य ही प्रवेश करती हैं (अतः उसका अज्ञान दूर हो जाता है)। रोगी होकर अपनी व्याधियों से मुक्ति पाते हैं।

हो स्वस्थ्य उनका जीवन, हो अवश्य तुल्य कांति तन ।
हो विकसित प्रज्ञानन, पाएं ज्ञान सम देवगुरु प्राज्ञन ।। (८५)

भावार्थ: (रोगी) वह स्वस्थ हो जाते हैं। उनका शरीर स्वर्ण समान हो जाता है (स्वस्थ हो जाता है)। बुद्धि का विकास होता है, और वह देवगुरु वृहस्पति के सामान बुद्धिमान बन जाते हैं।

करे जो स्तुति पठन श्रवन, गाए महात्मय सूर्य भगवन ।
हो प्रसन्न इहलोक सर्वन, पाए सुख शान्ति प्रमोदन ।। (८६)

भावार्थ: जो इस स्तुति का पठन एवं श्रवण करते हुए सूर्यदेव के महात्मय का गान करता है, उसे इहलोक में सुख, शान्ति, आनंद एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होती है।

हो निवास सूर्यलोक मरन, दें रवि देव मोक्ष आत्मन ।
करो सभी रवि का पूजन, है वही एक सर्वश्रेष्ठ देवन ।। (८७)

भावार्थ: मरण पर उसे रवि लोक में स्थान मिलता है। सूर्यदेव उसकी आत्मा को मोक्ष प्रदान कर देते हैं। इसीलिए (ब्रह्मदेव कहते हैं) सूर्य देव का पूजन करो जो सर्वश्रेष्ठ देव हैं।

इति श्री सूर्य देव माहात्मय

डॉ यतेंद्र शर्मा - सन १९५३ में एक हिन्दू सनातन परिवार में जन्मे डॉ यतेंद्र शर्मा की रूचि बचपन से ही सनातन धर्म ग्रंथों का पठन पाठन एवं श्रवण में रही है। संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने अपने पितामह श्री भगवान् दास जी एवं नरवर संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सालिग्राम अग्निहोत्री जी से प्राप्त की और पांच वर्ष की आयु में महर्षि पाणिनि रचित संस्कृत व्याकरण कौमुदी को कंठस्थ किया। उन्होंने तकनीकी विश्वविद्यालय ग्राज़ ऑस्ट्रिया से रसायन तकनीकी में पी.अच्.डी की उपाधी विशिष्टता के साथ प्राप्त की। सन १९८९ से डॉ यतेंद्र शर्मा अपने परिवार सहित पर्थ ऑस्ट्रेलिया में निवास कर रहें हैं, तथा पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के खनन उद्योग में कार्य रत हैं।

सन २०१६ में उन्होंने अपने कुछ धार्मिक मित्रों के साथ एक धार्मिक संस्था 'श्री राम कथा संस्थान पर्थ' की स्थापना की। यह संस्था श्री भगवान् स्वामी रामानंद जी महाराज (१४वीं- १५वीं शताब्दी) की शिक्षाओं से प्रभावित है तथा समय समय पर गोस्वामी तुलसी दास जी रचित श्री राम चरित मानस एवं अन्य धार्मिक कथाओं का प्रवचन, सनातन धर्म के महान संतों, ऋषियों, माताओं का चरित्र वर्णन एवं धार्मिक कथाओं के संकलन में अपना योगदान करने का प्रयास करती है।

श्री राम कथा संस्थान पर्थ

कार्यालय: ३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया – ६०२५
वेबसाइट: https://shriramkatha.org
ई-मेल: srkperth@outlook.com
टेलीफोन: +६१ (०८) ९४०१ १५४३